

Galatians

गलातियों

1 Greetings from Paul, an apostle. I was chosen to be an apostle, but not by any group or person here on earth. My authority came from none other than Jesus Christ and God the Father, who raised Jesus from death. ²Greetings also from all those in God's family who are with me.

To the churches in Galatia.*

³I pray that God our Father and the Lord Jesus Christ will be good to you and give you peace.

⁴Jesus gave himself for our sins to free us from this evil world we live in. This is what God our Father wanted. ⁵The glory belongs to God forever and ever. Amen.

There Is Only One Good News Message

⁶A short time ago God chose you to follow him. He chose you through his grace that came through Christ. But now I am amazed that you are already turning away and believing something different from the Good News we told you.

⁷There is no other message that is the Good News, but some people are confusing you. They want to change the Good News about Christ.

⁸We told you the true Good News message. So anyone who tells you a different message should be condemned—even if it's one of us or even an angel from heaven! ⁹I said this before. Now I say it again: You have already accepted the Good News. Anyone who tells you another way to be saved should be condemned!

¹⁰Now do you think I am trying to make people accept me? No, God is the one I am trying to please. Am I trying to please people? If I wanted to please people, I would not be a servant of Christ.

1:2 Galatia Probably the area where Paul began churches on his first missionary trip. Read Acts 13 and 14.

1 पौलुस की ओर से, जो एक प्रेरित है, जिसने एक ऐसा सेवा व्रत धारण किया है, जो उसे न तो मनुष्यों से प्राप्त हुआ है और न किसी एक मनुष्य द्वारा दिया गया है, बल्कि यीशु मसीह द्वारा उस परम पिता परमेश्वर से, जिसने यीशु मसीह को मरे हुएों में से फिर से जिला दिया था, दिया गया है।

²और मेरे साथ जो भाई हैं, उन सब की ओर से गलातिया* क्षेत्र की कलीसियाओं के नाम:

³हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले। ⁴जिसने हमारे पापों के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया ताकि इस पापपूर्ण संसार से, जिसमें हम रह रहे हैं, वह हमें छुटकारा दिला सके। हमारे परम पिता परमेश्वर की यही इच्छा है। ⁵वह सदा सर्वदा महिमावान हो आमीन!

सच्चा सुसमाचार एक ही है

⁶मुझे अचरज है। कि तुम लोग इतनी जल्दी उस परमेश्वर से मुँह मोड़ कर, जिसने मसीह के अनुग्रह द्वारा तुम्हें बुलाया था, किसी दूसरे सुसमाचार की ओर जा रहे हो। ⁷कोई दूसरा सुसमाचार तो वास्तव में है ही नहीं, किन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हें भ्रम में डाल रहे हैं और मसीह के सुसमाचार में हेर-फेर का जतन कर रहे हैं। ⁸किन्तु चाहे हम हों और चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि तुम्हें हमारे द्वारा सुनाये गये सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाता है तो उसे धिक्कार है। ⁹जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर दोहरा रहा हूँ कि यदि चाहे हम हों, और चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि तुम्हारे द्वारा स्वीकार किए गए सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाता है तो उसे धिक्कार है।

¹⁰क्या इससे तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं मनुष्यों का समर्थन चाहता हूँ? या यह कि मुझे परमेश्वर का समर्थन मिले? अथवा क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का जतन कर रहा हूँ? यदि मैं मनुष्यों को प्रसन्न करता तो मैं मसीह के सेवक का सा नहीं होता।

1:2 गलातिया कदाचित्त यह वही क्षेत्र रहा होगा जहाँ अपनी पहली धार्मिक सेवा यात्रा के अवसर पर पौलुस ने उपदेश दिया था और कलीसिया की स्थापना की थी। देखें प्रेरितों के काम 13 और 14

Paul's Authority Is From God

¹¹ Brothers and sisters, I want you to know that the Good News message I told you was not made up by anyone. ¹² I did not get my message from any other human. The Good News is not something I learned from other people. Jesus Christ himself gave it to me. He showed me the Good News that I should tell people.

¹³ You have heard about my past life in the Jewish religion. I persecuted the church of God very much. I tried to destroy his people. ¹⁴ I was becoming a leader in the Jewish religion. I did better than most other Jews my own age. I tried harder than anyone else to follow the traditions we got from our ancestors.

¹⁵ But God had special plans for me even before I was born. So he chose me through his grace. He wanted me ¹⁶ to tell the Good News about his Son to the non-Jewish people. So God let me see and learn about his Son. When this happened, I did not get advice or help from anyone. ¹⁷ I did not go to Jerusalem to see those who were apostles before I was. But, without waiting, I went away to Arabia. Later, I went back to the city of Damascus.

¹⁸ Three years later I went to Jerusalem to meet Peter. I stayed with him 15 days. ¹⁹ I met no other apostles—only James, the brother of the Lord. ²⁰ God knows there is nothing untrue in any of this. ²¹ Later, I went to the areas of Syria and Cilicia.

²² No one in any of Christ's churches in Judea had ever met me before. ²³ They had only heard this about me: "This man was persecuting us. But now he is telling people about the same faith that he once tried to destroy." ²⁴ These believers praised God because of me.

The Other Apostles Accepted Paul

2 After 14 years I went back to Jerusalem with Barnabas and took Titus with me. ² I went there because God showed me that I should go. I explained to them the message that I tell the non-Jewish people. I also met alone with those who were considered to be the leaders. I wanted

पौलुस का सुसमाचार परमेश्वर से प्राप्त है

¹¹ हे भाईयों, मैं तुम्हें जताना चाहता हूँ कि वह सुसमाचार जिसका उपदेश तुम्हें मैंने दिया है, ¹² कोई मनुष्य से प्राप्त सुसमाचार नहीं है क्योंकि न तो मैंने इसे किसी मनुष्य से पाया है और न ही किसी मनुष्य ने इसकी शिक्षा मुझे दी है। बल्कि देवी संदेश के रूप में यह यीशु मसीह द्वारा मेरे सामने प्रकट हुआ है।

¹³ यहूदी धर्म में मैं पहले कैसे जीया करता था, उसे तुम सुन चुके हो, और तुम यह भी जानते हो कि मैंने परमेश्वर की कलीसिया पर कितना अत्याचार किया है और उसे मिटा डालने का प्रयास तक किया है। ¹⁴ यहूदी धर्म के पालने में मैं अपने युग के समकालीन यहूदियों से आगे था क्योंकि मेरे पूर्वजों से जो परम्पराएँ मुझे मिली थीं, उनमें मेरी उत्साहपूर्ण आस्था थी।

¹⁵ किन्तु परमेश्वर ने तो मेरे जन्म से पहले ही मुझे चुन लिया था और अपने अनुग्रह में मुझे बुला लिया था। ¹⁶ ताकि वह मुझे अपने पुत्र का ज्ञान करा दे जिससे मैं ग़ैर यहूदियों के बीच उसके सुसमाचार का प्रचार करूँ। उस समय तत्काल मैंने किसी मनुष्य से कोई राय नहीं ली। ¹⁷ और न ही मैं उन लोगों के पास यरूशलेम गया जो मुझसे पहले प्रेरित बने थे। बल्कि मैं अरब को गया और फिर वहाँ से दमिश्क लौट आया।

¹⁸ फिर तीन साल के बाद पतरस से मिलने के लिए मैं यरूशलेम पहुँचा और उसके साथ एक पखवाड़े ठहरा। ¹⁹ किन्तु वहाँ मैं प्रभु के भाई याकूब को छोड़ कर किसी भी दूसरे प्रेरित से नहीं मिला। ²⁰ मैं परमेश्वर के सामने शपथपूर्वक कहता हूँ कि जो कुछ मैं लिख रहा हूँ उसमें झूठ नहीं है। ²¹ उसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के प्रदेशों में गया।

²² किन्तु यहूदिया के मसीह को मानने वाले कलीसिया व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं जानते थे। ²³ किन्तु वे लोगों को कहते सुनते थे, "वही व्यक्ति जो पहले हमें सताया करता था, उसी विश्वास, यानी उसी मत का प्रचार कर रहा है, जिसे उसने कभी नष्ट करने का प्रयास किया था।" ²⁴ मेरे कारण उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की।

पौलुस को प्रेरितों की मान्यता

2 चौदह साल बाद मैं फिर से यरूशलेम गया। **2** बरनाबास मेरे साथ था और तितुस को भी मैंने साथ ले लिया था। ² मैं परमेश्वर के दिव्य दर्शन के कारण वहाँ गया था। मैं ग़ैर यहूदियों के बीच जिस सुसमाचार का उपदेश दिया करता हूँ, उसी सुसमाचार को मैंने एक निजी सभा के बीच कलीसिया के मुखियाओं

to be sure we were in agreement so that my past work and the work I do now would not be wasted.

³Titus, who was with me, is a Greek. But these leaders still did not force him to be circumcised. ⁴We needed to talk about these problems, because some who pretended to be our brothers had come into our group secretly. They came in like spies to find out about the freedom we have in Christ Jesus. They wanted to make us slaves, ⁵but we did not agree with anything those false brothers wanted. We wanted the truth of the Good News to continue for you.

⁶Those men who were considered to be important did not change the Good News message I tell people. (It doesn't matter to me if they were "important" or not. To God everyone is the same.) ⁷But these leaders saw that God had given me a special work, the same as Peter. God gave Peter the work of telling the Good News to the Jews. But God gave me the work of telling the Good News to the non-Jewish people. ⁸God gave Peter the power to work as an apostle for the Jewish people. God gave me the power to work as an apostle too, but for those who are not Jews. ⁹James, Peter, and John seemed to be the leaders. And they saw that God had given me this special gift of ministry, so they accepted Barnabas and me. They said to us, "We agree that you should go to those who are not Jews, and we will go to the Jews." ¹⁰They asked us to do only one thing—to remember to help those who are poor. And this was something that I really wanted to do.

Paul Shows That Peter Was Wrong

¹¹When Peter came to Antioch, he did something that was not right. I stood against him, because he was wrong. ¹²This is what happened: When Peter first came to Antioch, he ate and associated with the non-Jewish people. But when some Jewish men came from James, Peter separated himself from the non-Jews. He stopped eating with them, because he was afraid

को सुनाया। मैं वहाँ इसलिए गया था कि परमेश्वर ने मुझे दर्शाया था कि मुझे वहाँ जाना चाहिए। ताकि जो काम मैंने पिछले दिनों किया था, या जिसे मैं कर रहा हूँ, वह बेकार न चला जाये।

³परिणाम स्वरूप तितुस तक को, जो मेरे साथ था, यद्यपि वह यूनानी है, फिर भी उसे खतना कराने के लिये विवश नहीं किया गया। ⁴किन्तु उन झूठे बंधुओं के कारण जो लुके-छिपे हमारे बीच भेदिये के रूप में यीशु मसीह में हमारी स्वतन्त्रता का पता लगाने को इसलिए घुस आये थे कि हमें दास बना सकें, यह बात उठी ⁵किन्तु हमने उनकी अधीनता में घुटने नहीं टेके ताकि वह सत्य जो सुसमाचार में निवास करता है, तुम्हारे भीतर बना रहे।

⁶किन्तु जाने माने प्रतिष्ठित लोगों से मुझे कुछ नहीं मिला। उन सम्मानित लोगों से मुझे या मेरे सुसमाचार को कोई लाभ नहीं हुआ। (वे कैसे भी थे, मुझे इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। बिना किसी भेदभाव के सभी मनुष्य परमेश्वर के सामने एक जैसे हैं।) ⁷किन्तु इन मुखियाओं ने देखा कि परमेश्वर ने मुझे वैसे ही एक विशेष काम सौंपा है जैसे पतरस को परमेश्वर ने यहूदियों को सुसमाचार सुनाने का काम दिया था। किन्तु परमेश्वर ने गैर यहूदी लोगों को सुसमाचार सुनाने का काम मुझे दिया। ⁸परमेश्वर ने पतरस को एक प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति दी थी। पतरस गैर यहूदी लोगों के लिए एक प्रेरित है। परमेश्वर ने मुझे भी एक प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति दी है। किन्तु मैं उन लोगों का प्रेरित हूँ जो यहूदी नहीं हैं। ⁹इस प्रकार उन्होंने मुझ पर परमेश्वर के उस अनुग्रह को समझ लिया और कलीसिया के स्तम्भ समझे जाने वाले याकूब, पतरस और यहून्ना ने बरनाबास और मुझसे साझेदारी के प्रतीक रूप में हाथ मिला लिया। और वे सहमत हो गये कि हम विधर्मियों के बीच उपदेश देते रहें और वे यहूदियों के बीच। ¹⁰उन्होंने हमसे बस यही कहा कि हम उनके निर्धनों का ध्यान रखें। और मैं इसी काम को न केवल करना चाहता था बल्कि इसके लिए लालायित भी था।

पौलस की दृष्टि में पतरस अनुचित

¹¹किन्तु जब पतरस अन्ताकिया में आया तो मैंने खुल कर उसका विरोध किया क्योंकि वह अनुचित था। ¹²क्योंकि याकूब द्वारा भेजे हुए कुछ लोगों के यहाँ पहुँचने से पहले वह गैर यहूदियों के साथ खाता पीता था। किन्तु उन लोगों के आने के बाद उसने गैर यहूदियों से अपना हाथ खींच लिया और स्वयं को उनसे अलग कर लिया। उसने उन

of the Jews who believe that all non-Jewish people must be circumcised. ¹³ So Peter was a hypocrite. The other Jewish believers joined with him, so they were hypocrites too. Even Barnabas was influenced by what these Jewish believers did. ¹⁴ They were not following the truth of the Good News. When I saw this, I spoke to Peter in front of everyone. I said, “Peter, you are a Jew, but you don’t live like one. You live like someone who is not a Jew. So why are you trying to force those who are not Jewish to live like Jews?”

¹⁵ We are Jews by birth. We were not born “sinners,” as we call those who are not Jews. ¹⁶ But we know that no one is made right with God by following the law. It is trusting in Jesus Christ that makes a person right with God. So we have put our faith in Christ Jesus, because we wanted to be made right with God. And we are right with him because we trusted in Christ—not because we followed the law. I can say this because no one can be made right with God by following the law.

¹⁷ We Jews came to Christ to be made right with God, so it is clear that we were sinners too. Does this mean that Christ makes us sinners? Of course not. ¹⁸ But I would be wrong to begin teaching again those things that I gave up. ¹⁹ It was the law itself that caused me to end my life under the law. I died to the law so that I could live for God. I have been nailed to the cross with Christ. ²⁰ So I am not the one living now—it is Christ living in me. I still live in my body, but I live by faith in the Son of God. He is the one who loved me and gave himself to save me. ²¹ I am not the one destroying the meaning of God’s grace. If following the law is how people are made right with God, then Christ did not have to die.

God’s Blessing Comes Through Faith

3 You people in Galatia are so foolish! Why do I say this? Because I told you very clearly about the death of Jesus Christ on the cross. But now it seems as though you have let someone use their magical powers to make you forget.

लोगों के डर से ऐसा किया जो चाहते थे कि ग़ैर यहूदियों का भी ख़तना होना चाहिए। ¹³ दूसरे यहूदियों ने भी इस दिखावे में उसका साथ दिया। यहाँ तक कि इस दिखावे के कारण बरनाबास तक भटक गया। ¹⁴ मैंने जब यह देखा कि सुसमाचार में निहित सत्य के अनुसार वे सीधे रास्ते पर नहीं चल रहे हैं तो सब के सामने पतरस से कहा, “जब तुम यहूदी होकर भी ग़ैर यहूदी का सा जीवन जीते हो, तो फिर ग़ैर यहूदियों को यहूदियों की रीति पर चलने को विवश कैसे कर सकते हो?”

¹⁵ हम तो जन्म के यहूदी हैं। हमारा पापी ग़ैर यहूदी से कोई सम्बन्ध नहीं है। ¹⁶ फिर भी हम यह जानते हैं कि किसी व्यक्ति को व्यवस्था के विधान का पालन करने के कारण नहीं बल्कि यीशु मसीह में विश्वास के कारण नेक ठहराया जाता है। हमने इसलिये यीशु मसीह का विश्वास धारण किया है ताकि इस विश्वास के कारण हम नेक ठहराये जायें, न कि व्यवस्था के विधान के पालन के कारण। क्योंकि उसे पालने से तो कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं होता।

¹⁷ किन्तु यदि हम जो यीशु मसीह में अपनी स्थिति के कारण धर्मी ठहराया जाना चाहते हैं, हम ही विधर्मियों के समान पापी पाये जायें तो इसका अर्थ क्या यह नहीं है कि मसीह पाप को बढ़ावा देता है। निश्चय ही नहीं। ¹⁸ यदि जिसका मैं त्याग कर चुका हूँ, उस रीति का ही फिर से उपदेश देने लगूँ तब तो मैं आज्ञा का उल्लंघन करने वाला अपराधी बन जाऊँगा। ¹⁹ क्योंकि व्यवस्था के विधान के द्वारा व्यवस्था के लिये तो मैं मर चुका ताकि परमेश्वर के लिये मैं फिर से जी जाऊँ मसीह के साथ मूझे क्रूस पर चढ़ा दिया है। ²⁰ इसी से अब आगे मैं जीवित नहीं हूँ किन्तु मसीह मुझ में जीवित है। सो इस शरीर में अब मैं जिस जीवन को जी रहा हूँ, वह तो विश्वास पर टिका है। परमेश्वर के उस पुत्र के प्रति विश्वास पर जो मुझसे प्रेम करता था, और जिसने अपने आप को मेरे लिए अर्पित कर दिया। ²¹ मैं परमेश्वर के अनुग्रह को नहीं नकार रहा हूँ, किन्तु यदि धार्मिकता व्यवस्था के विधान के द्वारा परमेश्वर से नाता जुड़ा पाता तो मसीह बेकार ही अपने प्राण क्यों देता।

परमेश्वर का वरदान विश्वास से मिलता है

3 हे मूर्ख गलातियों, तुम पर किसने जादू कर दिया है? तुम्हें तो, सब के सामने यीशु मसीह को क्रूस पर कैसे चढ़ाया गया था, इसका

²Tell me this one thing: How did you receive the Spirit? Did you receive the Spirit by following the law? No, you received the Spirit because you heard the message about Jesus and believed it.

³You began your life in Christ with the Spirit. Now do you try to complete it by your own power? That is foolish. ⁴You have experienced many things. Were all those experiences wasted? I hope they were not wasted! ⁵Does God give you the Spirit because you follow the law? Does God work miracles among you because you follow the law? No, God gives you his Spirit and works miracles among you because you heard the message about Jesus and believed it.

⁶The Scriptures say the same thing about Abraham. "Abraham believed God, and because of this faith he was accepted as one who is right with God."* ⁷So you should know that the true children of Abraham are those who have faith. ⁸The Scriptures told what would happen in the future. These writings said that God would make the non-Jewish people right through their faith. God told this Good News to Abraham before it happened. God said to Abraham, "I will use you to bless all the people on earth."* ⁹Abraham believed this, and because he believed, he was blessed. All people who believe are blessed the same as Abraham was.

¹⁰But people who depend on following the law to make them right are under a curse. As the Scriptures say, "They must do everything that is written in the law. If they do not always obey, they are under a curse."* ¹¹So it is clear that no one can be made right with God by the law. The Scriptures say, "The one who is right with God by faith will live forever."*

¹²The law does not depend on faith. No, it says that the only way a person will find life by the law is to obey its commands.* ¹³The law

पूरा विवरण दे दिया गया था। ²मैं तुमसे बस इतना जानना चाहता हूँ कि तुमने आत्मा का वरदान क्या व्यवस्था के विधान को पालने से पाया था, अथवा सुसमाचार के सुनने और उस पर विश्वास करने से? ³क्या तुम इतने मूर्ख हो सकते हो कि जिस जीवन को तुमने आत्मा से आरम्भ किया, उसे अब हाड़-माँस के शरीर की शक्ति से पूरा करोगे? ⁴तुमने इतने कष्ट क्या बेकार ही उठाये? आशा है कि वे बेकार नहीं थे। ⁵परमेश्वर, जो तुम्हें आत्मा प्रदान करता है और जो तुम्हारे बीच आश्चर्य कर्म करता है, वह यह इसलिए करता है कि तुम व्यवस्था के विधान को पालते हो या इसलिए कि तुमने सुसमाचार को सुना है और उस पर विश्वास किया है।

⁶यह वैसे ही है जैसे कि इब्राहीम के विषय में शास्त्र कहता है: "उसने परमेश्वर में विश्वास किया और यह उसके लिये धार्मिकता गिनी गई।"* ⁷तो फिर तुम यह जान लो, इब्राहीम के सच्चे वंशज वे ही हैं जो विश्वास करते हैं। ⁸शास्त्र ने पहले ही बता दिया था, "परमेश्वर गैर यहूदियों को भी उनके विश्वास के कारण धर्मीज़ ठहरायेगा। और इन शब्दों के साथ पहले से ही इब्राहीम को परमेश्वर द्वारा सुसमाचार से अवगत करा दिया गया था।"* ⁹इसीलिए वे लोग जो विश्वास करते हैं विश्वासी इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं।

¹⁰किन्तु वे सभी लोग जो व्यवस्था के विधानों के पालन पर निर्भर रहते हैं, वे तो किसी अभिशाप के अधीन हैं। शास्त्र में लिखा है: "ऐसा हर व्यक्ति शापित है जो व्यवस्था के विधान की पुस्तक में लिखी हर बात का लगन के साथ पालन नहीं करता।"* ¹¹अब यह स्पष्ट है कि व्यवस्था के विधान के द्वारा परमेश्वर के सामने कोई भी नेक नहीं ठहरता है। क्योंकि शास्त्र के अनुसार "धर्मी व्यक्ति विश्वास के सहारे जीयेगा।"*

¹²किन्तु व्यवस्था का विधान तो विश्वास पर नहीं टिका है बल्कि शास्त्र के अनुसार, "जो व्यवस्था के विधान को पालेगा, वह उन ही के सहारे जीयेगा।"* ¹³मसीह ने हमारे शाप को

3:6 Quote from Gen. 15:6.

3:8 Quote from Gen. 12:3.

3:10 Quote from Deut. 27:26.

3:11 Quote from Hab. 2:4.

3:12 *the only way ... commands* See Lev. 18:5.

3:6 देखें उत्पत्ति 15:6

3:8 देखें उत्पत्ति 12:3

3:10 देखें व्यवस्था. 27:26

3:11 देखें हबक. 2:4

3:12 "जो ... जीयेगा" देखें लैव्य. 18:5

says we are under a curse for not always obeying it. But Christ took away that curse. He changed places with us and put himself under that curse. The Scriptures say, "Anyone who is hung on a tree is under a curse."¹⁴ Because of what Jesus Christ did, the blessing God promised to Abraham was given to all people. Christ died so that by believing in him we could have the Spirit that God promised.

The Law and the Promise

¹⁵ Brothers and sisters, let me give you an example from everyday life: Think about an agreement that one person makes with another. After that agreement is made official, no one can stop it or add anything to it, and no one can ignore it. ¹⁶ God made promises to Abraham and his Descendant. The Scripture does not say, "and to your descendants." That would mean many people. But it says, "and to your Descendant." That means only one, and that one is Christ. ¹⁷ This is what I mean: The agreement that God gave to Abraham was made official long before the law came. The law came 430 years later. So the law could not take away the agreement and change God's promise.

¹⁸ Can following the law give us the blessing God promised? If we could receive it by following the law, then it would not be God's promise that brings it to us. But God freely gave his blessings to Abraham through the promise God made.

¹⁹ So what was the law for? The law was given to show the wrong things people do. The law would continue until the special Descendant of Abraham came. This is the Descendant mentioned in the promise, which came directly from God. But the law was given through angels, and the angels used Moses as a mediator to give the law to the people. ²⁰ But when God gave the promise, there was no mediator, because a mediator is not needed when there is only one side, and God is one.

अपने ऊपर ले कर व्यवस्था के विधान के शाप से हम मुक्त कर दिया। शास्त्र कहता है, "हर कोई जो वृक्ष पर टाँग दिया जाता है, शापित है।"¹⁴ मसीह ने हमें इसलिए मुक्त किया कि, इब्राहीम को दी गयी आशीश मसीह यीशु के द्वारा गौर यहूदियों को भी मिल सके ताकि विश्वास के द्वारा हम उस आत्मा को प्राप्त करें, जिसका वचन दिया गया था।

व्यवस्था का विधान और वचन

¹⁵ हे भाईयों, अब मैं तुम्हें दैनिक जीवन से एक उदाहरण देने जा रहा हूँ। देखो, जैसे किसी मनुष्य द्वारा कोई करार कर लिया जाने पर, न तो उसे रद्द किया जा सकता है और न ही उसमें से कुछ घटाया जा सकता है। और न बढ़ाया, ¹⁶ वैसे ही इब्राहीम और उसके भावी वंशज के साथ की गयी प्रतिज्ञा के संदर्भ में भी है। (देखो, शास्त्र यह नहीं कहता, "और उसके वंशजों को" यदि ऐसा होता तो बहुतों की ओर संकेत होता किन्तु शास्त्र में एक वचन का प्रयोग है। शास्त्र कहता है, "और तेरे वंशज को" जो मसीह है।) ¹⁷ मेरा अभिप्राय यह है कि जिस करार को परमेश्वर ने पहले ही सुनिश्चित कर दिया उसे चार सौ तीस साल बाद आने वाला व्यवस्था का विधान नहीं बदल सकता और न ही उसके वचन को नाकारा ठहरा सकता है।

¹⁸ क्योंकि यदि उत्तराधिकार व्यवस्था के विधान पर टिका है तो फिर वह वचन पर नहीं टिकेगा। किन्तु परमेश्वर ने उत्तराधिकार वचन के द्वारा मुक्त रूप से इब्राहीम को दिया था।

¹⁹ फिर भला व्यवस्था के विधान का प्रयोजन क्या रहा? आज्ञा उल्लंघन के अपराध के कारण व्यवस्था के विधान को वचन से जोड़ दिया गया था ताकि जिस के लिए वचन दिया गया था, उस वंशज के आने तक वह रहे। व्यवस्था का विधान एक मध्यस्थ के रूप में मूसा की सहायता से स्वर्गदूत द्वारा दिया गया था। ²⁰ अब देखो, मध्यस्थ तो दो के बीच होता है, किन्तु परमेश्वर तो एक ही है।

The Purpose of the Law of Moses

²¹ Does this mean that the law works against God's promises? Of course not. The law was never God's way of giving new life to people. If it were, then we could be made right with God by following the law. ²² But this is not possible. The Scriptures put the whole world in prison under the control of sin, so that the only way for people to get what God promised would be through faith in Jesus Christ. It is given to those who believe in him.

²³ Before this faith came, the law held us as prisoners. We had no freedom until God showed us the way of faith that was coming. ²⁴ I mean the law was the guardian in charge of us until Christ came. After he came, we could be made right with God through faith. ²⁵ Now that the way of faith has come, we no longer need the law to be our guardian.

²⁶⁻²⁷ You were all baptized into Christ, and so you were all clothed with Christ. This shows that you are all children of God through faith in Christ Jesus. ²⁸ Now, in Christ, it doesn't matter if you are a Jew or a Greek, a slave or free, male or female. You are all the same in Christ Jesus. ²⁹ You belong to Christ, so you are Abraham's descendants. You get all of God's blessings because of the promise that God made to Abraham.

4 This is what I am saying: When young children inherit all that their father owned, they are still no different from his slaves. It doesn't matter that they own everything. ² While they are children, they must obey those who are chosen to care for them. But when they reach the age the father set, they are free. ³ It is the same for us. We were once like children, slaves to the useless rules of this world. ⁴ But when the right time came, God sent his Son, who was born from a woman and lived under the law. ⁵ God did this so that he could buy the freedom of those who were under the law. God's purpose was to make us his children.

⁶ Since you are now God's children, he has sent the Spirit of his Son into your hearts. The Spirit cries out, "Abba, Father." ⁷ Now you are

मूसा की व्यवस्था के विधान का प्रयोजन

²¹ क्या इसका यह अर्थ है कि व्यवस्था का विधान परमेश्वर के वचन का विरोधी है? निश्चित रूप से नहीं। क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था का विधान दिया गया होता जो लोगों में जीवन का संचार कर सकता तो वह व्यवस्था का विधान ही परमेश्वर के सामने धार्मिकता को सिद्ध करने का साधन बन जाता। ²² किन्तु शास्त्र ने घोषणा की है कि यह समूचा संसार पाप की शक्ति के अधीन है। ताकि यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर जो वचन दिया गया है, वह विश्वासी जनों को भी मिले।

²³ इस विश्वास के आने से पहले, हमें व्यवस्था के विधान की देखरेख में, इस आने वाले विश्वास के प्रकट होने तक, बंदी के रूप में रखा गया। ²⁴ इस प्रकार व्यवस्था के विधान हमें मसीह तक ले जाने के लिए एक कठोर अभिभावक था ताकि अपने विश्वास के आधार पर हम नेक ठहरें। ²⁵ अब जब यह विश्वास प्रकट हो चुका है तो हम उस कठोर अभिभावक के अधीन नहीं हैं।

²⁶ यीशु मसीह में विश्वास के कारण तुम सभी परमेश्वर की संतान हो। ²⁷ क्योंकि तुम सभी जिन्होंने मसीह का बपतिस्मा ले लिया है, मसीह में समा गये हो। ²⁸ सो अब किसी में कोई अन्तर नहीं रहा न कोई यहूदी रहा, न गैर यहूदी, न दास रहा, न स्वतन्त्र, न पुरुष रहा, न स्त्री, क्योंकि मसीह यीशु में तुम सब एक हो। ²⁹ और क्योंकि तुम मसीह के हो तो फिर तुम इब्राहीम के वंशज हो, और परमेश्वर ने जो वचन इब्राहीम को दिया था, उस वचन के उत्तराधिकारी हो।

4 मैं कहता हूँ कि उत्तराधिकारी जब तक बालक है तो चाहे सब कुछ का स्वामी वही होता है, फिर भी वह दास से अधिक कुछ नहीं रहता। ² वह अभिभावकों और घर के सेवकों के तब तक अधीन रहता है, जब तक उसके पिता द्वारा निश्चित समय नहीं आ जाता। ³ हमारी भी ऐसी ही स्थिति है। हम भी जब बच्चे थे तो सांसारिक नियमों के दास थे। ⁴ किन्तु जब उचित अवसर आया तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो एक स्त्री से जन्मा था। और व्यवस्था के अधीन जीता था। ⁵ ताकि वह व्यवस्था के अधीन व्यक्तियों को मुक्त कर सके जिससे हम परमेश्वर के गोद लिये बच्चे बन सकें।

⁶ और फिर क्योंकि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, सो उसने तुम्हारे हृदयों में पुत्र की आत्मा को भेजा। वही आत्मा "हे अब्बा," "हे पिता" कहते हुए पुकारती है। ⁷ इसलिए अब तू दास नहीं है बल्कि

not slaves like before. You are God's children, and you will receive everything he promised his children.

Paul's Love for the Galatian Believers

⁸In the past you did not know God. You were slaves to gods that were not real. ⁹But now you know the true God. Really, though, it is God who knows you. So why do you turn back to the same kind of weak and useless rules you followed before? Do you want to be slaves to those things again? ¹⁰⁻¹¹It worries me that you follow teachings about special days, months, seasons, and years. I fear that my work for you has been wasted.

¹²Brothers and sisters, I became like you. So please become like me. You were very good to me before. ¹³You know that I came to you the first time because I was sick. That was when I told the Good News to you. ¹⁴My sickness was a burden to you, but you did not stop showing me respect or make me leave. Instead, you welcomed me as if I were an angel from God. You accepted me as if I were Jesus Christ himself! ¹⁵You were very happy then. Where is that joy now? I can say without a doubt that you would have done anything to help me. If it had been possible, you would have taken out your own eyes and given them to me. ¹⁶Am I now your enemy because I tell you the truth?

¹⁷Those people are working hard to persuade you, but this is not good for you. They want to persuade you to turn against us and work hard for them. ¹⁸It is good for you to work hard, of course, if it is for something good. That's something you should do whether I am there or not. ¹⁹My little children, I am in pain again over you, like a mother giving birth. I will feel this pain until people can look at you and see Christ. ²⁰I wish I could be with you now. Then maybe I could change the way I am talking to you. Now I don't know what to do about you.

The Example of Hagar and Sarah

²¹Some of you people want to be under the law. Tell me, do you know what the law says?

पुत्र है और क्योंकि तू पुत्र है, इसलिए तुझे परमेश्वर ने अपना उत्तराधिकारी भी बनाया है।

गलाती मसीहियों के लिए पौलुस का प्रेम

⁸पहले तुम लोग जब परमेश्वर को नहीं जानते थे तो तुम लोग देवताओं के दास थे। वे वास्तव में परमेश्वर नहीं थे। ⁹किन्तु अब तुम परमेश्वर को जानते हो, या यूँ कहना चाहिये कि परमेश्वर के द्वारा अब तुम्हें पहचान लिया गया है। फिर तुम उन साररहित, दुबल नियमों की ओर क्यों लौट रहे हो। तुम फिर से उनके अधीन क्यों होना चाहते हो? ¹⁰तुम किन्हीं विशेष दिनों, महीनों, ऋतुओं और वर्षों को मानने लगे हो। ¹¹तुम्हारे बारे में मुझे डर है कि तुम्हारे लिए जो काम मैंने किया है, वह सारा कहीं बेकार तो नहीं हो गया है।

¹²हे भाईयों, कृपया मेरे जैसे बन जाओ। देखो, मैं भी तो तुम्हारे जैसा बन गया हूँ, यह मेरी तुमसे प्रार्थना है, ऐसा नहीं है कि तुमने मेरे प्रति कोई अपराध किया है। ¹³तुम तो जानते ही हो कि अपनी शारीरिक व्याधि के कारण मैंने पहली बार तुम्हें ही सुसमाचार सुनाया था। ¹⁴और तुमने भी, मेरी अस्वस्थता के कारण, जो तुम्हारी परीक्षा ली गयी थी, उससे मुझे छोटा नहीं समझा और न ही मेरा निषेध किया। बल्कि तुमने परमेश्वर के स्वर्गदूत के रूप में मेरा स्वागत किया। मानों मैं स्वयं मसीह यीशु ही था। ¹⁵सो तुम्हारी उस प्रसन्नता का क्या हुआ? मैं तुम्हारे लिए स्वयं इस बात का साक्षी हूँ कि यदि तुम समर्थ होते तो तुम अपनी आँखें तक निकाल कर मुझे दे देते। ¹⁶सो क्या सच बोलने से ही मैं तुम्हारा शत्रु हो गया?

¹⁷तुम्हें व्यवस्था के विधान पर चलाना चाहने वाले तुममें बड़ी गहरी रुचि लेते हैं। किन्तु उनका उद्देश्य अच्छा नहीं है। वे तुम्हें मुझ से अलग करना चाहते हैं। ताकि तुम भी उनमें गहरी रुचि ले सको। ¹⁸कोई किसी में सदा गहरी रुचि लेता रहे, यह तो एक अच्छी बात है किन्तु यह किसी अच्छे के लिए होना चाहिये। और बस उसी समय नहीं, जब मैं तुम्हारे साथ हूँ। ¹⁹मेरे प्रिय बच्चो! मैं तुम्हारे लिये एक बार फिर प्रसव वेदना को झेल रहा हूँ, जब तक तुम मसीह जैसे ही नहीं हो जाते। ²⁰मैं चाहता हूँ कि अभी तुम्हारे पास आ पहुँचूँ और तुम्हारे साथ अलग ही तरह से बातें करूँ, क्योंकि मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम्हारे लिये क्या किया जाये।

सारा और हाजिरा का उदाहरण

²¹व्यवस्था के विधान के अधीन रहना चाहने वालों से मैं पूछना चाहता हूँ: क्या तुमने

²² The Scriptures say that Abraham had two sons. The mother of one son was a slave woman, and the mother of the other son was a free woman. ²³ Abraham's son from the slave woman was born in the normal human way. But the son from the free woman was born because of the promise God made to Abraham.

²⁴ This true story makes a picture for us. The two women are like the two agreements between God and his people. One agreement is the law that God made on Mount Sinai. The people who are under this agreement are like slaves. The mother named Hagar is like that agreement. ²⁵ So Hagar is like Mount Sinai in Arabia. She is a picture of the earthly Jewish city of Jerusalem. This city is a slave, and all its people are slaves to the law. ²⁶ But the heavenly Jerusalem that is above is like the free woman, who is our mother.

²⁷ The Scriptures say,

“Be happy, woman—you who cannot have children.

Be glad you never gave birth.

Shout and cry with joy!

You never felt those labor pains.

The woman who is alone will have more children than the woman

who has a husband.” *Isaiah 54:1*

²⁸ My brothers and sisters, you are children who were born because of God's promise, just as Isaac was. ²⁹ But the other son of Abraham, who was born in the normal way, caused trouble for the one who was born by the power of the Spirit. It is the same today. ³⁰ But what do the Scriptures say? “Throw out the slave woman and her son! The son of the free woman will receive everything his father has, but the son of the slave woman will receive nothing.”* ³¹ So, my brothers and sisters, we are not children of the slave woman. We are children of the free woman.

Keep Your Freedom

5 We have freedom now, because Christ made us free. So stand strong in that freedom. Don't

व्यवस्था के विधान का यह कहना नहीं सुना। ²²कि इब्राहीम के दो पुत्र थे। एक का जन्म एक दासी से हुआ था और दूसरे का एक स्वतन्त्र स्त्री से। ²³दासी से पैदा हुआ पुत्र प्राकृतिक परिस्थितियों में जन्मा था किन्तु स्वतन्त्र स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न हुआ था, वह परमेश्वर के द्वारा की गयी प्रतिज्ञा का परिणाम था।

²⁴इन बातों का प्रतीकात्मक अर्थ है: ये दो स्त्रियाँ, दो वाचओं का प्रतीक हैं। एक वाचा सिने पर्वत से प्राप्त हुआ था जिसने उन लोगों को जन्म दिया जो दासता के लिये थे। यह वाचा हाजिरा से सम्बन्धित है। ²⁵हाजिरा अरब में स्थित सिने पर्वत का प्रतीक है, वह वर्तमान यरूशलेम की ओर संकेत करती है क्योंकि वह अपने बच्चों के साथ दासता भुगत रही है। ²⁶किन्तु स्वर्ग में स्थित यरूशलेम स्वतन्त्र है। और वही हमारी माता है। ²⁷शास्त्र कहता है:

“बाँझ! आनन्द मना,

तूने किसी को न जना;

हर्ष नाद कर, तुझ को प्रसव वेदना न हुई,

और हैंसी-खुशी में खिलखिला।

क्योंकि परित्यक्ता की अनगिनत

संतानें हैं उसकी उतनी नहीं है

जो पतिवन्ती है।”

यशायाह 54:1

²⁸इसलिए भाईयों, अब तुम इसहाक की जैसी परमेश्वर के वचन की संतान हो। ²⁹किन्तु जैसे उस समय प्राकृतिक परिस्थितियों के अधीन पैदा हुआ आत्मा की शक्ति से उत्पन्न हुए को सताता था, वैसी ही स्थिति आज है। ³⁰किन्तु देखो, पवित्र शास्त्र क्या कहता है? “इस दासी और इसके पुत्र को निकाल कर बाहर करो क्योंकि यह दासी पुत्र तो स्वतन्त्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।”* ³¹इसीलिए हे भाईयों, हम उस दासी की संतान नहीं हैं, बल्कि हम तो स्वतन्त्र स्त्री की संतान हैं।

स्वतन्त्र बने रहो

5 मसीह ने हमें स्वतन्त्र किया है, ताकि हम स्वतन्त्रता का आनन्द ले सकें। इसलिए अपने विश्वास को दृढ़ बनाये रखो और फिर से व्यवस्था के विधान के

go back into slavery again. ² Listen! I, Paul, tell you that if you start following the law by being circumcised, then Christ cannot help you. ³ Again, I warn everyone: If you allow yourselves to be circumcised, then you must follow the whole law. ⁴ If you try to be made right with God through the law, your life with Christ is finished—you have left God's grace. ⁵ I say this because our hope of being right with God comes through faith. And the Spirit helps us feel sure as we wait for that hope. ⁶ When someone belongs to Christ Jesus, it is not important if they are circumcised or not. The important thing is faith—the kind of faith that works through love.

⁷ You were doing so well. Who caused you to stop following the truth? ⁸ It certainly wasn't the one who chose you. ⁹ Be careful! "Just a little yeast makes the whole batch of dough rise." ¹⁰ I trust in the Lord that you will not believe those different ideas. Someone is trying to confuse you. Whoever it is will be punished.

¹¹ My brothers and sisters, I don't teach that a man must be circumcised. If I do teach circumcision, then why am I still being persecuted? If I still taught circumcision, then my message about the cross would not be a problem. ¹² I wish those people who are bothering you would add castration to their circumcision.

¹³ My brothers and sisters, God chose you to be free. But don't use your freedom as an excuse to do what pleases your sinful selves. Instead, serve each other with love. ¹⁴ The whole law is made complete in this one command: "Love your neighbor the same as you love yourself."* ¹⁵ If you continue hurting each other and tearing each other apart, be careful, or you will completely destroy each other.

जुए का बोझ मत उठाओ। ² सुनो! स्वयं मैं, पौलुस तुमसे कह रहा हूँ कि यदि खतना करा कर तुम फिर से व्यवस्था के विधान की ओर लौटते हो तो तुम्हारे लिये मसीह का कोई महत्त्व नहीं रहेगा। ³ अपना खतना कराने देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को, मैं एक बार फिर से जताये देता हूँ कि उसे समूचे व्यवस्था के विधान पर चलना अनिवार्य है। ⁴ तुममें से जितने भी लोग व्यवस्था के पालन के कारण धर्मी के रूप में स्वीकृत होना चाहते हैं, वे सभी मसीह से दूर हो गये हैं और परमेश्वर के अनुग्रह के क्षेत्र से बाहर हैं। ⁵ किन्तु हम विश्वास के द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी स्वीकार किये जाने की आशा रखते हैं। आत्मा की सहायता से हम इसकी बाट जोह रहे हैं। ⁶ क्योंकि मसीह यीशु में स्थिति के लिये न तो खतना कराने का कोई महत्त्व है और न खतना नहीं कराने का बल्कि उसमें तो प्रेम से पैदा होने वाले विश्वास का ही महत्त्व है।

⁷ तुम तो बहुत अच्छी तरह एक मसीह का जीवन जीते रहे हो। अब तुम्हें, ऐसा क्या है जो सत्य पर चलने से रोक रहा है। ⁸ ऐसी विमर्त्ति जो तुम्हें सत्य से दूर कर रही है, तुम्हारे बुलाने वाले परमेश्वर की ओर से नहीं आयी है। ⁹ थोड़ा सा खमीर गुँधे हुए समूचे आटे को खमीर से उठा लेता है। ¹⁰ प्रभु के प्रति मेरा पूरा भरोसा है कि तुम किसी भी दूसरे मत को नहीं अपनाओगे किन्तु तुम्हें विचलित करने वाला चाहे कोई भी हो, उचित दण्ड पायेगा।

¹¹ हे भाईयों, यदि मैं आज भी, जैसा कि कुछ लोग मुझ पर लांछन लगाते हैं कि मैं खतने का प्रचार करता हूँ तो मुझे अब तक यातनाएँ क्यों दी जा रही हैं? और यदि मैं अब भी खतने की आवश्यकता का प्रचार करता हूँ, तब तो मसीह के क्रूस के कारण पैदा हुई मेरी सभी बाधाएँ समाप्त हो जानी चाहियें। ¹² मैं तो चाहता हूँ कि वे जो तुम्हें डिगाना चाहते हैं, खतना कराने के साथ साथ अपने आपको बधिया ही करा डालते।

¹³ किन्तु भाईयो, तुम्हें परमेश्वर ने स्वतन्त्र रहने को चुना है। किन्तु उस स्वतन्त्रता को अपने आप पूर्ण स्वभाव की पूर्ति का साधन मत बनने दो, इसके विपरीत प्रेम के कारण परस्पर एक दूसरे की सेवा करो। ¹⁴ क्योंकि समूचे व्यवस्था के विधान का सार संग्रह इस एक कथन में ही है: "अपने साथियों से वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो।"* ¹⁵ किन्तु आपस में काट करते हुए यदि तुम एक दूसरे को खाते रहोगे तो देखो! तुम आपस में ही एक दूसरे को समाप्त कर दोगे।

The Spirit and Human Nature

¹⁶So I tell you, live the way the Spirit leads you. Then you will not do the evil things your sinful self wants. ¹⁷The sinful self wants what is against the Spirit, and the Spirit wants what is against the sinful self. They are always fighting against each other, so that you don't do what you really want to do. ¹⁸But if you let the Spirit lead you, you are not under law.

¹⁹The wrong things the sinful self does are clear: committing sexual sin, being morally bad, doing all kinds of shameful things, ²⁰worshiping false gods, taking part in witchcraft, hating people, causing trouble, being jealous, angry or selfish, causing people to argue and divide into separate groups, ²¹being filled with envy, getting drunk, having wild parties, and doing other things like this. I warn you now as I warned you before: The people who do these things will not have a part in God's kingdom. ²²But the fruit that the Spirit produces in a person's life is love, joy, peace, patience, kindness, goodness, faithfulness, ²³gentleness, and self-control. There is no law against these kinds of things. ²⁴Those who belong to Christ Jesus have crucified their sinful self. They have given up their old selfish feelings and the evil things they wanted to do. ²⁵We get our new life from the Spirit, so we should follow the Spirit. ²⁶We must not feel proud and boast about ourselves. We must not cause trouble for each other or be jealous of each other.

Help Each Other

6 Brothers and sisters, someone in your group might do something wrong. You who are following the Spirit should go to the one who is sinning. Help make that person right again, and do it in a gentle way. But be careful, because you might be tempted to sin too. ²Help each other with your troubles. When you do this, you are obeying the law of Christ. ³If you think you are too important to do this, you are only fooling yourself. ⁴Don't compare yourself with others.

मानव-प्रकृति और आत्मा

¹⁶किन्तु मैं कहता हूँ कि आत्मा के अनुशासन के अनुसार आचरण करो और अपनी पाप पूर्ण प्रकृति की इच्छाओं की पूर्ति मत करो। ¹⁷क्योंकि शारीरिक भौतिक अभिलाषाएँ पवित्र आत्मा की अभिलाषाओं के और पवित्र आत्मा की अभिलाषाएँ शारीरिक भौतिक अभिलाषाओं के विपरीत होती हैं। इनका आपस में विरोध है। इसलिए तो जो तुम करना चाहते हो, वह कर नहीं सकते। ¹⁸किन्तु यदि तुम पवित्र आत्मा के अनुशासन में चलते हो तो फिर व्यवस्था के विधान के अधीन नहीं रहते।

¹⁹अब देखो! हमारे शरीर की पापपूर्ण प्रकृति के कामों को तो सब जानते हैं। वे हैं: व्यभिचार अपवित्रता, भोगविलास, ²⁰मूर्ति पूजा, जादू-टोना, बेर भाव, लड़ाई-झगड़ा, डाह, क्रोध, स्वार्थीपन, मतभेद, फूट, ईर्ष्या, ²¹नशा, लंपटता या ऐसी ही और बातें। अब मैं तुम्हें इन बातों के बारे में वैसे ही चेता रहा हूँ जैसे मैंने तुम्हें पहले ही चेता दिया था कि जो लोग ऐसी बातों में भाग लेंगे, वे परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार नहीं पायेंगे। ²²जबकि पवित्र आत्मा, प्रेम, प्रसन्नता, शांति, धीरज, दयालुता, नेकी, विश्वास, ²³नम्रता और आत्म-संयम उपजाता है। ऐसी बातों के विरोध में कोई व्यवस्था का विधान नहीं है। ²⁴उन लोगों ने जो यीशु मसीह के हैं, अपने पापपूर्ण मानव-स्वभाव को वासनाओं और इच्छाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। ²⁵क्योंकि जब हमारे इस नये जीवन का स्रोत आत्मा है तो आओ आत्मा के ही अनुसार चलें। ²⁶हम अभिमानी न बनें। एक दूसरे को न चिढ़ायें। और न ही परस्पर ईर्ष्या रखें।

एक दूसरे की सहायता करो

6 हे भाईयों, तुममें से यदि कोई व्यक्ति कोई पाप करते पकड़ा जाए तो तुम आध्यात्मिक जनों को चाहिये कि नम्रता के साथ उसे धर्म के मार्ग पर वापस लाने में सहायता करो। और स्वयं अपने लिये भी सावधानी बरतो कि कहीं तुम स्वयं भी किसी परीक्षा में न पड़ जाओ। ²परस्पर एक दूसरे का भार उठाओ। इस प्रकार तुम मसीह की व्यवस्था का पालन करोगे। ³यदि कोई व्यक्ति महत्त्वपूर्ण न होते हुए भी अपने को महत्त्वपूर्ण समझता है तो वह अपने को धोखा देता है। ⁴अपने कर्म का मूल्यांकन हर किसी को स्वयं करते रहना चाहिये। ऐसा करने पर ही उसे अपने आप पर, किसी दूसरे के साथ तुलना किये बिना, गर्व करने का

Just look at your own work to see if you have done anything to be proud of. ⁵You must each accept the responsibilities that are yours.

Never Stop Doing Good

⁶Whoever is being taught God's word should share the good things they have with the one who is teaching them.

⁷If you think you can fool God, you are only fooling yourselves. You will harvest what you plant. ⁸If you live to satisfy your sinful self, the harvest you will get from that will be eternal death. But if you live to please the Spirit, your harvest from the Spirit will be eternal life. ⁹We must not get tired of doing good. We will receive our harvest of eternal life at the right time. We must not give up. ¹⁰When we have the opportunity to do good to anyone, we should do it. But we should give special attention to those who are in the family of believers.

Paul Ends His Letter

¹¹This is my own handwriting. You can see how big the letters are. ¹²Those men who are trying to force you to be circumcised are only doing it so that their people will accept them. They are afraid they will be persecuted if they follow only the cross of Christ. ¹³They are circumcised, but they don't obey the law themselves. They want you to be circumcised so that they can boast about what they did to you.

¹⁴I hope I will never boast about things like that. The cross of our Lord Jesus Christ is my only reason for boasting. Through Jesus' death on the cross the world is dead to me, and I am dead to the world. ¹⁵It doesn't matter if anyone is circumcised or not. The only thing that matters is this new life we have from God. ¹⁶Peace and mercy to those who follow this rule—to all God's people.

¹⁷So don't give me any more trouble. I have scars on my body that show I belong to Jesus.

¹⁸My brothers and sisters, I pray that the grace of our Lord Jesus Christ will be with your spirits. Amen.

अवसर मिलेगा। ⁵क्योंकि अपना दायित्व हर किसी को स्वयं ही उठाना है।

जीवन खेत-बोने जैसा है

⁶जिसे परमेश्वर का वचन सुनाया गया है, उसे चाहिये कि जो उत्तम वस्तुएँ उसके पास हैं, उनमें अपने उपदेशक को साझी बनाए।

⁷अपने आपको मत छलो। परमेश्वर को कोई बुद्धू नहीं बना सकता क्योंकि जो जैसा बोयेगा, वैसा ही काटेगा। ⁸जो अपनी काया के लिए बोयेगा, वह अपनी काया से विनाश की फसल काटेगा। किन्तु जो आत्मा के खेत में बीज बोएगा, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की फसल काटेगा। ⁹इसलिए आओ हम भलाई करते कभी न थकें, क्योंकि यदि हम भलाई करते ही रहेंगे तो उचित समय आने पर हमें उसका फल मिलेगा। ¹⁰सो जैसे ही कोई अवसर मिले, हमें सभी के साथ भलाई करना चाहिये, विशेषकर अपने धर्म-भाईयों के साथ।

पत्र का समापन

¹¹देखो, मैंने तुम्हें स्वयं अपने हाथ से कितने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है। ¹²ऐसे लोग जो शारीरिक रूप से अच्छा दिखावा करना चाहते हैं, तुम पर खतना कराने का दबाव डालते हैं। किन्तु वे ऐसा बस इसलिए करते हैं कि उन्हें मसीह के क्रूस के कारण यातनाएँ न सहनी पड़ें। ¹³क्योंकि वे स्वयं भी जिनका खतना हो चुका है, व्यवस्था के विधान का पालन नहीं करते किन्तु फिर भी वे चाहते हैं कि तुम खतना कराओ ताकि वे तुम्हारे द्वारा इस शारीरिक प्रथा को अपनाए जाने पर डींगें मार सकें।

¹⁴किन्तु जिसके द्वारा मैं संसार के लिये और संसार मेरे लिये मर गया, प्रभु यीशु मसीह के उस क्रूस को छोड़ कर मुझे और किसी पर गर्व न हो। ¹⁵क्योंकि न तो खतने का कोई महत्त्व है और न बिना खतने का। यदि महत्त्व है तो वह नयी सृष्टि का है। ¹⁶इसलिए जो लोग इस धर्म-नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इच्छाएँ पर शांति तथा दया होती रहे।

¹⁷पत्र को समाप्त करते हुए मैं तुमसे विनती करता हूँ कि अब मुझे कोई और दुख मत दो। क्योंकि मैं तो पहले ही अपने देह में यीशु के घावों को लिए घूम रहा हूँ।

¹⁸हे भाईयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्माओं के साथ बना रहे। आमीन।